सपनों के से दिन

गुरदयाल सिंह

प्रश्न:-1 कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नही बनती - पाठ के यह किस अंश से सिद्ध होता हैं ?

उत्तर:-1 लेखक ने कहानी में लिखा है उनके आधे से अधिक साथी राजस्थान या हरियाणा से आकर मंडी में व्यापार या दुकानदारीकरने आए परिवारोंके थे । जब सब बहुत छोटे थे तो लेखक उनकी बोली कम समझपाते थे । उनके कुछ शब्द सुनकर लेखक को हँसी भी आने लगती थी परंतु खेलते तेा सभी एक दूसरे की बात अच्छी तरह समझ लेते थे पाठ के इस कंध से ये स्पष्ट हेाता है कि कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नही बनती है ।

प्रश्न:-2 पीटी साहब की शाबाश फौज के तमगों सी क्यों लगती थी ?स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर:-2 लेखक के पीटी मास्टर बहुत कठोरस्वभाव वाले व्यक्ति थे वे जब कभी स्काउट की परेड कराते तेा यदि विघार्थी कोई गलती नही करते तो कभी - कभी पीटी मास्टर अपनी चमकीली ऑंखें झपकते हुए शाबाश कह देते तेा विघार्थी को लगता जैसे उन्हेाने किसी फौज के सारे तमगें जीत लिये हो ऐसा इसलिए हेाता है क्योंकि रोज फटकारने वाले केाई अपनाप यदि साल में एक बार शाबाशकह दे तेा वह चमत्कार जैसे लगने लगताहै ।

प्रश्न:-3 नयी श्रेणी में जाने और नयी कापियों और पुरानी किताबों से आती विशेष गंध से लेखकका बालमनक्यों उदास हो उठता था ?

उत्तर:-3 नयी श्रेणी में आने का लेखक को कभी भी शौक नही होता था उसे अपनी नयी कापियों और पुरानी किताबों से गंध सी आती थी जिसका कारण लेखकने लिखा है कि आगे की श्रेणी केा मुश्किल पढाई और नए मास्टरों से पिटाई का ढर उनके भीतर कही जमकर बैठ गया था ।

प्रश्न:-4 स्काउटपरेड करतेसमय लेखक अपने को महत्वपूर्ण आदमी फौजी जवान क्यों समझने लगा था ?

उत्तर:-4 मास्टर प्रीतमचंद जब लेखक को स्काउटों की पेरड करवाते तो लेफ्ट - राइट की आवाज या मुँह में ली हिमलज से मार्च कराया करते फिर राइट टर्न या लेफ्ट टर्नया अबाऊट टर्न कहने पर छोटे - छोटे बूटों की एडियों पर दॉए बाएँ या एकदमपीछे मुडकर बूटों की ठक - ठक करते अकडकर चलते तो लेखक को लगता जैसे वे विघार्थी नही बहुत महत्वपूर्ण आदमी फौजी जवान हों ।

प्रश्न:-5 हेडमास्टर शर्मा जी ने पीटी साहब को क्यों मुअत्तल कर दिया ?

उत्तर:-5 पीटी मास्टर साहब केा एक बार कक्षा मे फारसी पढाने को काम दिया उन्होनें बच्चों को शब्द रूप याद करने को दिए अगले दिन जब उन्होंने बच्चों को शब्दरूप नही सुना पाया जब पीटी साहब ने क्रोधित होते हुए सभी विघाथियों को मुर्गा बनकर पीठ ऊँची

रखनेकी सजा दे दी उसी समय हेडमास्टर साहब वहॉ से निकलेऔर उन्होंने बच्चों केा इस प्रकार की कठोर सजा भुगवते हुए देखा तो उन्हें बहुत बुरा लगा और उन्होंने उसी समय पीटी मास्टर साहब को नौकरी से मुअत्तल कर दिया ।

प्रश्न:-6 लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल खुशी से भाग जाने कर जगह न लगाने पर भी कब और क्यों उन्हें स्कूल जाना अच्छा लगने लगा

उत्तर -6 लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल जाना कभी भी अच्छा नहीं लगता था। अधिकतर उन्के सभी साथी रोते चिल्लाते ही स्कूल जाया करते थे । परंतू कभी -कभी उन्हें स्कूल जताना अच्छा भी लगता था। वह जब उनके स्काउटिंग के मास्टर उन्हें अभ्यास कराया करते थे । तो उनके हाथों में नीली पीली झंडियों देकर वन टू थ्री करते और झंडिया ऊपर नीचे करवाते तो हवा में लहराती और फडफडाती झंडियॉ के साथ खाकी वर्दी तथा गले में दो रंगा रूमाल लटकाना लेखक को बहुत अच्छा लगता था ।

प्रश्न-7 लेखक अपने हात्र जीवन में स्कूल से छुट्टियों में मिले काम को पूरा करने के लिए क्या -2 योजनाएँ बनाया करता था? और उसे पूरा न कर पानेकी स्थिति में किस की भॉती “बहादुर” बनने की कल्पना करता था ?

उत्तर:-7 लेखक जब स्कूल में पढते थे , तो उनको गर्गियों में दो महीने की छुट्टियॉ मिलती थी। जिनमें से पहला महीना स्कूल से मिले खेल-कूद में निकालन देते थे । और दूसरे महीने स्कूल से मिले हुए छुट्टियों के

गृहकार्य को पूरा करने का हिसाब लगाने लगते । जैसे गणित में उन्हें दो सौ सवाल करने होते थे । तो वे अपने मन मे सोचते कि अगर दस सवाल रोज करूँगा तो बीस दिन में काम पूरा हो जाएगा। और फिर वे दस दिन और खेल-कूद में बिता देते । जब बीस दिन रह जाते तो लेखक सोचता कि पंद्रह सवाल प्रतिदिन करके पंद्रह दिन में ही काम पूरा कर लूँगा ।

इसी प्रकार दिन बीतते जाते और लेखक अपना काम पूरा नही कर पाता । अंत में लेखक अपने उन सहपाठियों की तरह सोचने लगताजो स्कूल का काम करने की वजह मास्टरों की पिटाई खना सौदा समझते थे ।

प्रश्न:-8 पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर पीटी सर की चारितिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

उत्तर:-8 सपनोंके से दिन पाठ के प्रमुख पात्र मास्टर प्रतिपचंद के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताॅए है ।

अनुशासन प्रिय :- मास्टर प्रीतमचंद को अनुशासन बहुत प्रिय था विघालय मे यदि कोई विघार्थी अनुशासन तोडने की सोचता तो वे उसकी चमडी उधेड देने को तैयार रहते ।

सख्त अध्यापक :- मास्टर प्रीतमचंद के बारे में लेखक ने लिखा है कि उनके जैसा सख्त अध्यापक लेखक ने अपनी जिंदगी में नही देखा था उन्होंने कक्षा चार के बच्चों को भी शब्दरूप न सुनाने पर मुर्गा बननेकी सजा दे दी थी ।

<u>डरावना व्यक्तित्व</u> :- मास्टर प्रीतमचंद कठोर स्वभाव के ही नही थ्ज्ञे बल्कि उनका व्यक्तित्व भी भयभीत करने वालाथा । उनका ठिगनाकद दुबला -पतला परंतु गठीला शरीर माता के दागों से भरा हुआ चेहरा और बॉज सी तेज ऑखे खार्की वर्दी चमडे के चौडे पंजों वालेबूट सभी कुछ ही भयभीत करनेवाला हुआ करता ।

<u>पक्षियोंके प्रति प्रेम</u> :- अत्यंत कठोर स्वभाव होनेके बावजूद भी मास्टर प्रीतमचंद को पक्षियों से बहुत प्रेम था उन्होने अपने घर में दो तोते पाल रखे थे जिन्हें वो प्रतिदिन बादामकी गिरि छीलकर खिलाया करते थे और उनसे मीठी -मीठी बातें किया करते थे ।

प्रश्न:-9 विघाथियोंका अनुशासन मे रखने के लिए पाठ में अपनाई गई युक्तियों और वर्तमान में स्वीकृत मान्यताओं के संबंध में अपने विचार कीजिए ।

उत्तर:-9 विघाथियों को अनुशासन मे रखने के लिए वर्तमान की स्वीकृत मान्यताओं में मानवीय मूल्यों पर अधिक ध्यान दिया जाताहै विघाथियों के अधिकारेां का ध्यान रखा जाता है पहले जमाने मे विघाथियों केा अनुशासन में रखने के लिए शारीरिक और मानसिक दंड को महत्व दिया जाता था उनमें मारपीट तथा मुर्गा आदि बनाकर मन में भय बैठाया जाता था जिससे वे विघालय के नियमों का पालन करें परंतु आजकल अनुशासन बनाए रखने के लिए आत्मयिंत्रण पर बल दिया जाताहै । अच्छे व्यवहार अच्छा कार्य करने पर उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है छात्रों मे स्नेह सहानुभूत

एंव सम्मानपूर्वक व्यवहारकरने जैसे मानवीय मूल्यों की स्थापना की जाती है इतना ही नही शिक्षण विधि रचनात्मक एंव प्रयोगात्मक गतिविधियों को भी मिलाया गया है शारीरिक व मानसिक प्रताडनाको दण्डनीय अपराध घोषित कियागया है ।